राजकीय महाविद्यालय बनबसा(चम्पावत)

उत्तराखंड राज्य स्थापना (रजत जयंती)के उपलक्ष्य में
महायोगी गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय बिथ्याणी यमकेश्वर पौड़ी
राजकीय महाविद्यालय बनबसा चम्पावत
संस्कृत विभाग
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
श्रीमद्भगवद्गीता में जीवन प्रबंधन (06 नवंबर 2025)
मुख्य अतिथि
प्रो (डॉ0)विश्वनाथ खाली
निदेशक उच्च शिक्षा उत्तराखंड
विशिष्ट अतिथि
प्रो (डॉ0)ए0 एस0 उनियाल
संयुक्त निदेशक उच्च शिक्षा उत्तराखंड
सारस्वत अतिथि
प्रो (डॉ0) ए0 पी 0 सिंह
प्राचार्य रा0 म0 वि0 बनबसा
संरक्षक
प्रो (डॉ0)योगेश कुमार शर्मा
प्राचार्य रा0 म0 वि0 बिथ्याणी
मुख्य वक्ता
विशिष्ट वक्ता
संयोजक
डॉ0 नीरज नौटियाल
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)
सह संयोजक
प्रो0 मुकेश कुमार
तकनीकी संयोजक
डॉ0 केशव प्रसार डबराल
https://meet.google.com/rpoqzaa-wuz
6 November 2025
(01:00 PM)
Free Registraion
https://forms.gle/GxQxAD63t6wTtqgQA
ऑनलाइन फीडबैक फॉर्म भरने पर ईप्रमाण पत्र दिया जायेगा

राष्ट्रीय वेबिनार

"श्रीमद्भगवद्गीता में जीवन प्रबंधन"

(एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी)

- **आयोजक :** संस्कृत विभाग, महायोगी गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय, विशनपुरी यमकेश्वर, पौड़ी
- **सहआयोजक:** राजकीय महाविद्यालय, बनबसा, चम्पावत

दिनांक:

कार्यक्रम: **06 नवम्बर 2025** माध्यम: ऑनलाइन *(एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी)*

उत्तराखंड राज्य स्थापना के रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में , महायोगी गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय बिथ्याणी , यमकेश्वर, पौड़ी और राजकीय महाविद्यालय, बनबसा, चंपावत के संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'श्रीमद्भगवद्गीता में जीवन प्रबंधन ' आज (06 नवंबर 2025) सफलतापूर्वक संपन्न हुई । जिसमें **प्रो. (डॉ.) विश्वनाथ** खाली (निदेशक उच्च शिक्षा, उत्तराखंड), **प्रो. (डॉ.)** ए0 एस0 उनियाल (संयुक्त निदेशक उच्च शिक्षा, उत्तराखंड), **प्रो. (डॉ.) ए.** पी**. सिंह** (प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय बनबसा**), प्रो. (डॉ.) योगेश कुमार शर्मा** (प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय बिथ्याणी), **डॉ.** मुकेश **कुमार**, सहायक प्राध्यापक (संस्कृत), राजकीय महाविद्यालय बनबसा , मुख्य वक्ता सहायक प्राध्यापक, विशिष्ट वक्ता डॉ0 मनोज नौटियाल सहायक प्राध्यापक, डॉ नीरज नौटियाल सहायक प्राध्यापक शामिल रहे।

• राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य **श्रीमद्भगवद्गीता में निहित जीवन प्रबंधन, नैतिक मूल्यों, कर्तव्यबोध, नेतृत्व, आत्मनियंत्रण एवं मानसिक संतुलन जैसे सिद्धांतों को आधुनिक जीवन से जोड़कर समझना एवं उनका व्यावहारिक उपयोग प्रस्तुत करना** है।

संगोष्ठी के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रसार

गीता के शाश्वत संदेशों को वर्तमान समाज, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों तक पहुँचाना।

2. जीवन प्रबंधन के सिद्धांतों की व्याख्या

गीता के माध्यम से तनाव प्रबंधन, निर्णय क्षमता, कर्तव्यपरायणता, संतुलित जीवन एवं सकारात्मक सोच को समझाना।

3. शैक्षणिक और बौद्धिक विमर्श को बढ़ावा

विभिन्न विद्वानों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को एक मंच पर लाकर भारतीय दर्शन पर विचार–विमर्श कराना।

4. विद्यार्थियों में नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का विकास

युवा पीढ़ी को गीता के आदर्शों के आधार पर जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण प्रदान करना।

5. अनुसंधान एवं अध्ययन को प्रोत्साहन

गीता–अध्ययन, भारतीय दर्शन और आध्यात्मिक मनोविज्ञान पर नए अनुसंधान व अध्ययन को बढ़ावा देना।

मुख्य वक्ता एवं विषय वस्तु :

श्रीमद्भगवद्गीता केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं , बल्कि जीवन रूपी जटिलताओं को सुलझाने वाला एक आदर्श मार्गदर्शक है। *उन्होंने विद्यार्थियों से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र — शिक्षा,* समाज, प्रशासन, परिवार एवं व्यक्तिगत विकास —में गीता के कर्तव्य-योग और निष्काम कर्म के सिद्धांतों को अपनाने का आह्वान किया। वक्ताओं अपने वक्तव्य में कहा कि गीता मनुष्य को आत्म-विकास, विवेक और आत्मनिष्ठा का अद्वितीय संदेश देती है। उन्होंने बताया कि आज की प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में मनोवैज्ञानिक दवाब और भ्रम की स्थिति से उबरने के लिए गीता का 'समत्व योग' अत्यंत उपयोगी है। मुख्य वक्ता ने गीता के संदर्भ में बताया कि जीवन प्रबंधन का वास्तविक आधार आत्म-ज्ञान , कर्तव्य-पालन और सकारात्मक दृष्टिकोण है। उन्होंने अर्जुन और श्रीकृष्ण के संवाद को आधुनिक नेतृत्व, कार्यकुशलता, व्यवहारज्ञान और निर्णय क्षमता से जोड़ते हुए स्पष्ट किया कि गीता प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में संतुलन स्थापित करने की प्रेरणा देती है। *यह मनुष्य को आत्मानुशासन , सहनशीलता और नैतिक जीवन की ओर प्रेरित करती है।* उन्होंने कहा कि शिक्षण संस्थानों में गीता-आधारित मूल्य शिक्षा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस संगोष्ठी का उद्देश्य छात्रों को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ना है। उन्होंने बताया कि गीता का कर्मयोग सिद्धांत युवाओं को लक्ष्य *के प्रति समर्पित और कर्म में निष्ठावान बनाता है।* उन्होंने कहा कि गीता मनुष्य को आंतरिक शक्ति और आत्मविश्वास प्रदान करती है। उनके अनुसार , जीवन प्रबंधन तभी सफल है जब मन , बुद्धि और कर्म तीनों संतुलित हों। उन्होंने गीता को 'जीवन का विज्ञान' बताते हुए कहा कि अज्ञात परिस्थितियों में भी सही निर्णय लेने की क्षमता गीता से ही विकसित हो सकती है। उन्होंने युवा पीढ़ी को गीता-अध्ययन का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि गीता केवल दार्शनिक ग्रंथ नहीं , बल्कि जीवन का व्यावहारिक मार्गदर्शक है। साहित्य, शिक्षा और समाज के हर क्षेत्र में गीता के सिद्धांत मार्गदर्शन देते हैं।

हम सभी प्रतिभागियों , मुख्य वक्ताओं, विशिष्ट वक्ताओं, और अतिथियों का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

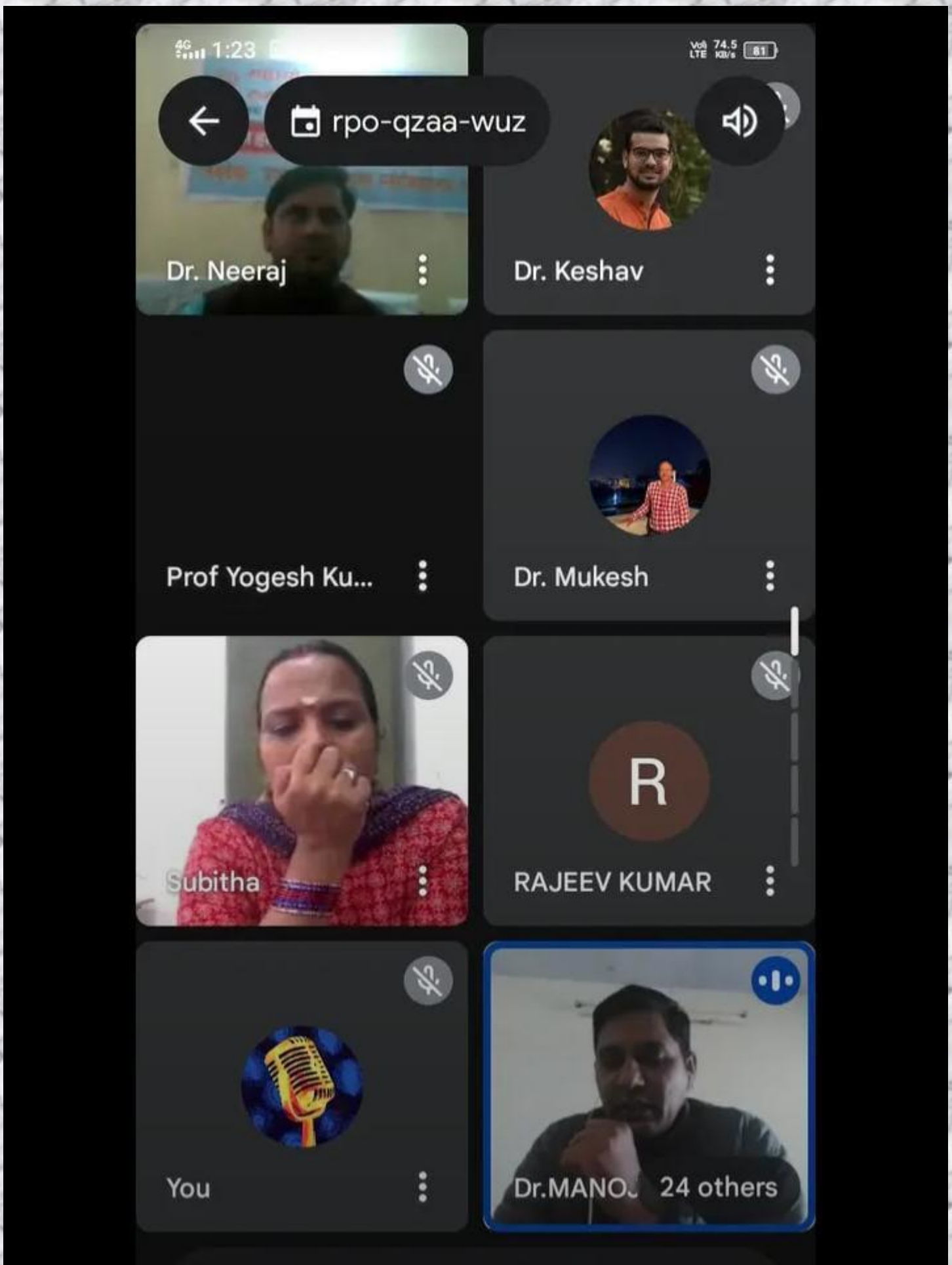
1:23
rpo-qzaa-wuz
Dr. Neeraj
Dr. Keshav
Prof Yogesh Ku...
Dr. Mukesh
Subitha
R
RAJEEV KUMAR
You
Dr.MANO
24 others

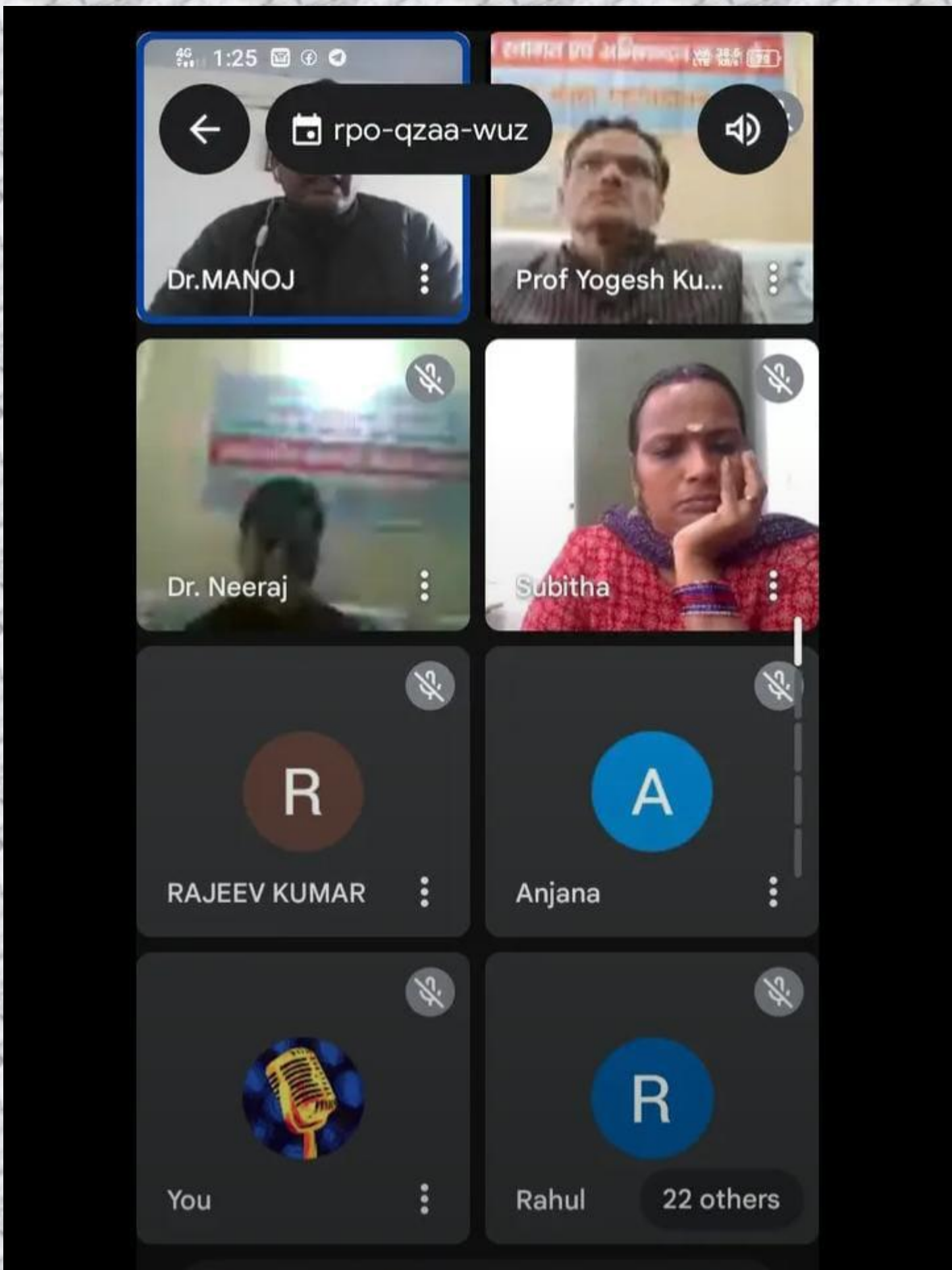
1:25
rpo-qzaa-wuz
Dr.MANOJ
Prof Yogesh Ku...
Dr. Neeraj
Subitha
R
RAJEEV KUMAR
A
Anjana
You
R
Rahul
22 others

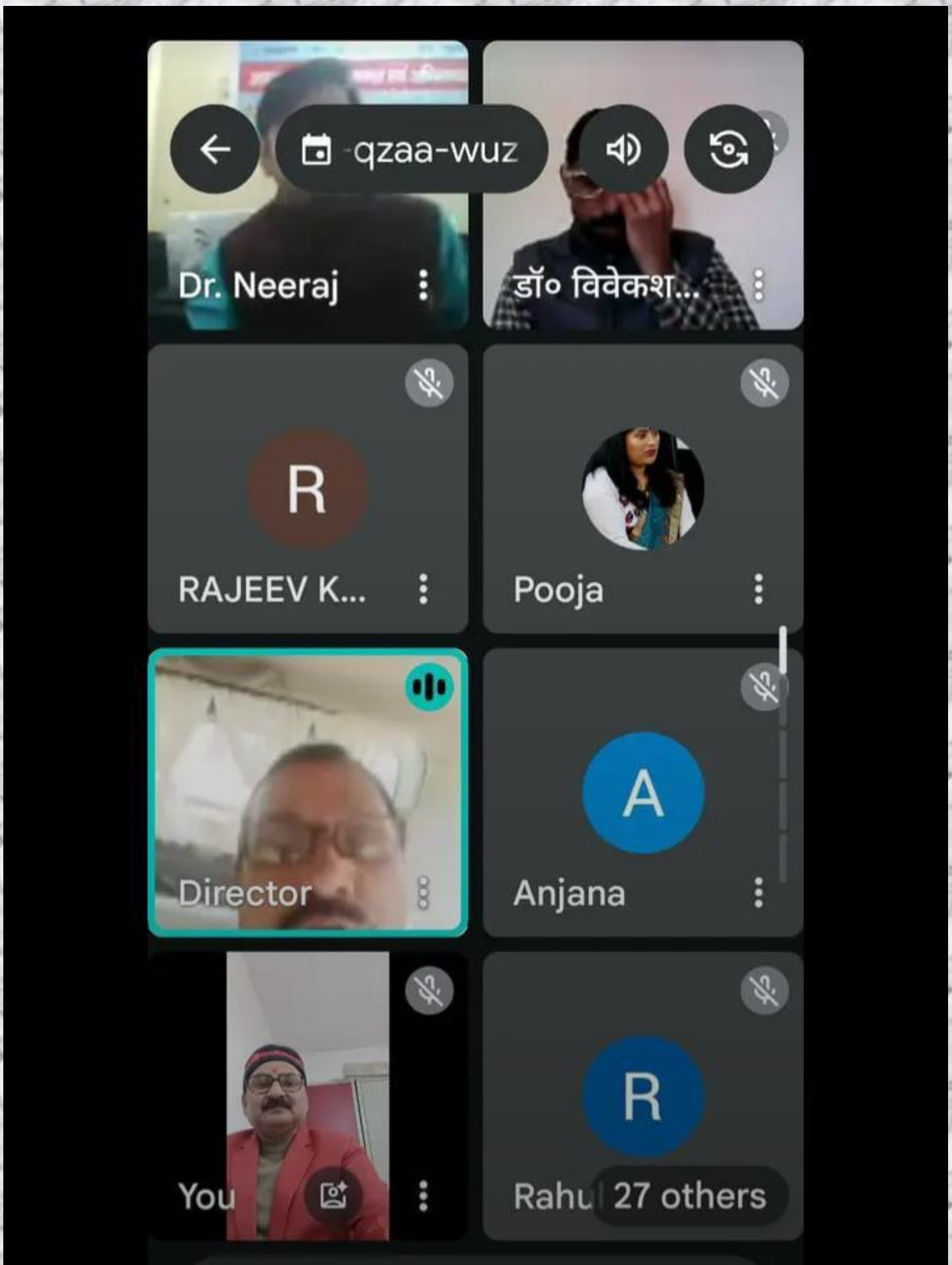
qzaa-wuz
Dr. Neeraj
डॉ० विवेकश...
R
RAJEEV K...
Pooja
Director
A
Anjana
You
R
Rahu
27 others

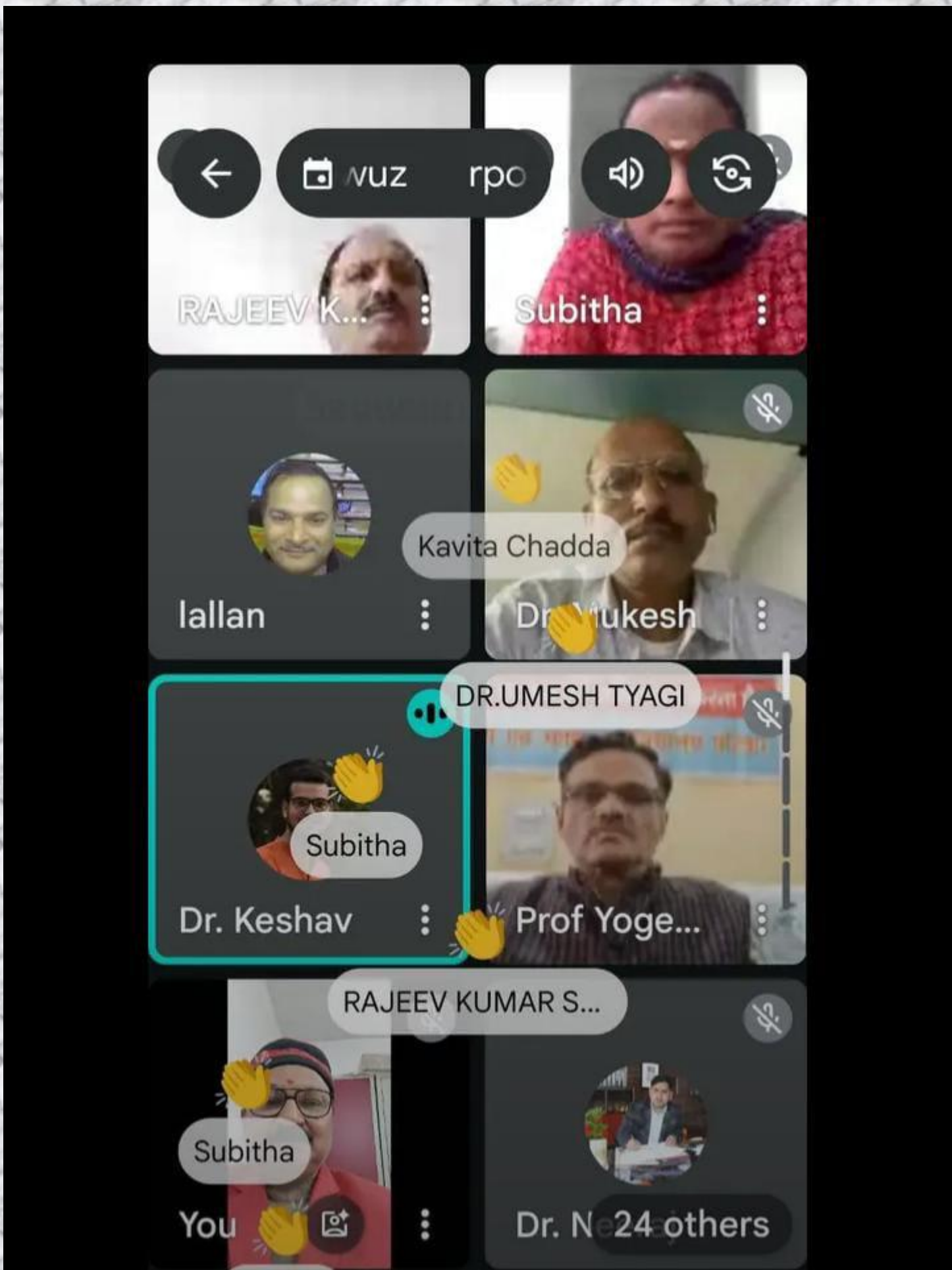
RAJEEV K...
Subitha
lallan
Kavita Chadda
DR.UMESH TYAGI
Subitha
Dr. Keshav
Prof Yoge...
RAJEEV KUMAR S...
Subitha
You
24 others

सेवा योजना इकाई
एक दिवसीय शिविर
प्राचार्य

प्राचार्य

राजकीय महाविद्यालय बनबसा

चम्पावत